ISSN No. : 2394-0344 **REMARKING :** VOL-1 * ISSUE-5*October-2014

वैदिक वाङ्मय में वर्णित मानवीय मूल्यों की वर्तमान में प्रासंगिकता

वन्दना सिंह
असिस्टेण्ट प्रोफेसर
संस्कृत विभाग
डी0एस0एन0 पी0जी0
कालेज,उन्नाव

सारांश

वैदिक वाङ्मय भारतीयों का अनुपम और अक्षय धन है। इस वाङ्मय में जिस प्रकार आध्यात्मिक ज्ञान उपलब्ध होता है, उसी प्रकार आधिभौतिक ज्ञान भी। मानव आदर्श तथा मानवीय जीवन दर्शन ही मानव मूल्य है और इसके विशुद्ध ज्ञान के लिए वैदिक वाङमय एक महत्वपूर्ण साधन है। मानवीय मूल्य से हमारे व्यक्तित्व का विकास होता है। मानवीय व्यवहार में मूल्य शब्द का अर्थ सहज जीवन, शुद्ध आचरण, आत्मसंयम, इन्द्रिय निग्रह, आत्मशुद्धि के अर्थ में प्रयुक्त हुआ है। प्रेम अहिंसा, नैतिकता, शील, संतोष, सत्य, लोक मंगल और लोक कल्याण की भावना भी मानवीय गुणों से ही सन्निहित है। इन गुणों से हमें शक्ति प्राप्त होती है।

शक्ति का स्रोत होने के कारण हम सभी इन्हें मूल्य कहते हैं। वैदिक वाङ्मय हमारे जीवन–यापन की सर्वोत्तम पद्धति एवं मानवीय मूल्यों की दृष्टि से अत्यन्त ही महत्वपूर्ण है। हमारे क्रान्तदर्शी ऋषियों की सत्यान्वेषण परक अनुभूतियों के कोष वैदिक वाङ्मय में लोक कल्याण विषयक निर्देश एवं जीवन मूल्य यत्र–तत्र प्रसंगवश वर्णित हैं, जो हमारे जीवन का मार्गदर्शन करते रहे हैं। ये मूल्य व्यक्ति को वास्तव में मानव बनने का संदेश देते हैं। हमारी वेदवाणी–''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' का उद्देश्य है कि सभी प्राणी स्वस्थ एवं सुखी हों तथा सबका कल्याण हो।

इस प्रकार वैदिक वाङ्मय में वर्णित मानवीय मूल्य सनातन एवं सार्वभौम है, जिसके मौलिक सिद्धान्तों को अपनाकर समाज का तथा व्यक्ति का पूर्ण कल्याण हो सकेगा। प्रस्तुत शोध–पत्र में इसे विस्तृत रूप से प्रतिपादित किया गया है।

मुख्य शब्द : Please Add Some Keywords

प्रस्तावना

आज के इस वैज्ञानिक युग में मानवीय मूल्यों में बढते क्षरण से मानव समाज एवं संस्कृति के समक्ष अनेको समस्याएँ उत्पन्न हो गयी है। अतएव मानव–मूल्यों के प्रति उपेक्षा समाज का सबसे बडा संकट बना हुआ है। वेद पृथ्वी पर मानव को दिया वह अमूल्य वरदान है जिसमें ज्ञान–विज्ञान की समस्त सम्पदा निहित है। ''वेदोडखिलो धर्ममूलम्'' और ''सर्वज्ञानमयो हिसः''[1] कहकर मनु ने वेद की महत्ता प्रदर्शित किया है। वेद साक्षात् ब्रह्मा की वाणी है, जो मानव जीवन के नैतिक नियमों व मूल्यों का उत्प्रेरक वेद हमें जीवन के सार्थक रूप को परिलक्षित करते हैं। वैदिक उदात्त भावनाएँ, आचरण, सम्बन्धी नियम, जीवो पर दया वसुधैव कुटम्बकम् की अवधारणा विश्वशान्ति मानवीय कल्याणकारी भावनाएँ ऋत् अर्थात सत्य आशावाद आदि अनेकों परिकल्पनाएँ वेदो में है जो मानव को एक उच्च जीवन जीने की ओर प्रेरित करती हैं।

वेद मानवमात्र के प्रकाश स्तम्भ है और शक्ति व ज्ञान के स्रोत हैं। जहाँ वेदों की ज्योति है वहाँ प्रकाश है सुख है, शान्ति है उन्नति है और सतत् विकास है। वेदों का स्वाध्याय प्रत्येक व्यक्ति समाज राष्ट्र तथा विश्व की उन्नति का साधन है। विश्व बन्धुत्व का प्रेरक है और विश्वधर्म का संस्थापक है। वेद भारतीय दर्शन संस्कृति एवं आर्यधर्म का मूल्य स्रोत है। धर्म के मूलतत्व को जानने का एक मात्र माध्यम वेद ही है। वेद मानव मात्र के कर्तव्यबोध का सबसे प्रामाणिक और महत्वपूर्ण धर्मग्रन्थ है जिसमें व्यक्ति के कर्तव्य–अकर्तव्य गुरू–शिष्य माता–पिता पुत्र–पुत्री व्यष्टि–समष्टि पाप–पुण्य दया–परोपकार सत्कर्म तथा अतिथि सत्कार आदि का विस्तृत ज्ञान प्राप्त होता है।

समाज के सभी व्यक्ति सद्भाव, समृद्वि एवं सुखपूर्वक जीवन–यापन कर सके इन्ही बातों को ध्यान में रखकर शास्त्र और संहिताएँ बनी जो हमारे सनातन धरोहर हैं। हमारी वेद वाणी सर्वे भवन्तु सुखिनः का उद्देश्य है सभी प्राणी स्वस्थ एवं सुखी हो तथा सबका कल्याण हो। जीवन को सुखमय बनाने के लिए शान्ति की परम् आवश्यकता है। हमारे ऋषि–मुनियो ने न केवल मानव की अपितु

समस्त प्राणी मात्र हेतु सुख समृद्धि एवं शान्ति की कामना की है –

''द्यौः शान्तिरन्तरिक्षं शान्तिः पृथिवी शान्तिरापः शान्तिरोषधयः शान्तिः वनस्पतयः शान्तिर्विश्वेदेवा शान्तिः ब्रम्ह शान्तिः सर्व शान्तिः शान्तिरेव शान्तिः सा मा शान्तिरेधि।''[2]

यास्क ने ''मत्वा कर्माणि सीव्यन्ति मनुष्यः''[3] के रूप में मनुष्य शब्द को परिभाषित किया है। मननपूर्वक कर्मनुष्ठानकर्ता को मनुष्य कहा जाता है। वह कर्मों का कर्ता तथा भोक्ता दोनो है। ''कुर्वन्नेवेह कर्मणि'' इस श्रुति से कर्तव्यशीलता सर्वोपरि है, यह भाव प्रकट होता है। मानवीय मूल्यों का व्यापक स्वरूप वैदिक वाङ्मय में दृष्टिगोचर होता है। वेदों में स्पष्ट निर्देश है कि लौकिक जीवनचर्या को किस प्रकार संयमित करके व्यक्ति स्वयं को भगवत् प्राप्ति के योग्य बना सकता है ? व्यक्ति के चित्तवृत्ति में प्रतिपल पवित्र, वरेण्य एवं उर्वर विचारधारा बहती रहे, जिससे उसके अन्तःकरण की सद्वृत्तियाँ जाग्रत होती रहें :–

तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमही। धियो यो नः प्रचोदयात्।।[4]

अर्थात् जो हमारी बुद्धियों को सन्मार्ग की ओर प्रेरित करते हैं, उन सविता देवता के वरण करने योग्य तेज को हम धारण करते हैं।

हमारी प्राचीन परम्पराएं एवं मानवीय मूल्य वैदिक वाङ्मय में परिकथित हैं, जिनके द्वारा ही धर्म का निरूपण होता है। धर्म प्रेरणा का वाचक है, जिसके द्वारा लौकिक एवं पारलौकिक दोनो प्रकार की सिद्धियाँ प्राप्त होती हैं। हमारी प्राचीन परम्परायें एवं मानवीय मूल्य अधिकार एवं कर्तव्यबोध पर आधारित हैं, जो सत्य, धर्म, दया एवं दान आदि के प्रति समर्पित हैं। मातृदेव, पितृदेव, आचार्यदेव, अतिथिदेव आदि भावनायें शाश्वत हैं जो आधुनिकयुग में भी प्रासंगिकता पूर्ण हैं। चेतना के धरातल पर कर्मों के जो चित्र अंकित होते हैं, वे संस्कार कहे जाते हैं।

इस प्रकार संस्कारों एवं मूल्यों से निर्मित सांस्कृतिक परम्परा प्रधान एवं शाश्वत होती हैं। अपनी शाश्वत परम्पराओं एवं मानवीय मूल्यों से विछिन्न मानव वस्तुतः दानव है। शाश्वतता मनुष्यता की सर्वोपरि कसौटी है। मानव जीवन के चार पुरूषार्थों–धर्म, अर्थ, काम और मोक्ष की प्राप्ति के लिए परम्पराओं का समादर किया जाता है। इनकी आधुनिक संगति आवश्यक है। इस युग में प्राचीन मान्यताओं एवं मूल्यों की आधुनिकता आवश्यक है। हमारी आराधना, उपासना की मान्यतायें वैज्ञानिकता से पूर्ण हैं।

मानव शरीर देव दुर्लभ है, क्योंकि इसे नरक, स्वर्ग तथा अपवर्ग (मोक्ष) की निश्रेणी (सीढ़ी) कहा गया है। इसकी प्राप्ति के लिए सत्य, धर्म, अहिंसा, परोपकारिता, कृतज्ञता तथा दानशीलता आदि वृत्तियों का पालन किया जाता है। दार्शनिक शिक्षा के क्रम में मातृदेवो भव, पितृदेवो भव, आचार्य देवा भव, अतिथि देवो भव की शिक्षा दी जाती है। देव–पितृ कर्मों में आलस्य विवार्जित शाश्वत् स्वरूप प्रस्तुत करती है। श्रुति की एक गाथा के अनुसार विद्या ब्राम्हणों–विद्वानों के प्रति अपनी रक्षा की बात कहती है। वह ब्राम्हणों की निधि है। अतः इस उचित पात्रों के प्रति ही प्रेषित करना चाहिए –

विद्या ह्वै ब्राम्हणमाजगाम्।
गोपाय मा शेवधिष्टेदुहमस्मि।।[5]

सम्प्रति शिक्षातंत्र के शैथिल्य के कारण मानवीय मूल्यों का अवमूल्यन दृष्टिगत होता है। प्राचीन मूल्यों के अवमूल्यन के कारण मानवता पीड़ित हो रही है। चारों ओर शोषण की प्रवृत्ति और भ्रष्टाचार व्याप्त है। नेताओं के कालेधन विदेशी बैंकों में जमा हो रहे हैं। पश्चिमी सभ्यता का अन्धानुकरण किया जा रहा है। जीवन मूल्यों की इस व्यापक अवनति के कारण भारतीयता समाप्त हो रही है। भारतीय प्रजातंत्र की खामियाँ उजागर हो रही हैं। विश्व बन्धुत्व की भावना क्षीण हो रही है। इसके लिए प्राचीन और नवीन शिक्षातंत्र का समन्वय भी आवश्यक है।

भारतीय चिन्तन धारा में वैदिक मान्यताओं एवं परम्पराओं का विशिष्ट स्थान है। धर्मशास्त्रकारों ने वेद को धर्म का मूल कहा है – ''वेदा धर्ममूलम''। वेद भारतीय संस्कृति की आत्मा और मानव के लिए प्रकाश स्तम्भ हैं। वैदिक वाङ्मय हमेशा से पूरे विश्व को आकर्षित करता रहा है। वह किसी धर्म, समुदाय या वर्ग विशेष का नहीं वरन् सम्पूर्ण मानवता के सुख–शान्ति के लिए कामना करता है। वैदिक प्रार्थना एवं मंत्र सेवा, सम्मान, समर्पण, आदि के साथ ही समत्व, ममत्व और विश्व बन्धुत्व आदि भावों को व्यक्त करते हैं। ये हमें मैत्री व अनन्य प्रेम का सन्देश देते रहे हैं। मानव मात्र के लिए वेद में कहा गया है कि सबके हृदय समान हों, सबके मन समान हों और कोई किसी से द्वेष न करें :–

समानो मंत्रः समितिः समानी समानं मनः सह चित्तमेषाम्।

समानं मंत्रमभि मंत्रये वः समानेन वो हविषा जुहोमि।।[7]

वेद में सभी से एकत्व की भावना स्थापित की गयी है, जिससे मोह, शोक और दुःख का अभाव हो जाता है। यह लौकिक जीवन की उत्कृष्टता से सम्बद्ध नैतिक भावनाओं एवं आदर्श सद्गुणों का भी अद्भुत संदेश देता है जो जन–जन के हृदय में परस्पर स्नेह, प्रेम, मैत्री, सद्भाव तथा समन्वय की भावना को प्रसारित करता है। समन्वय भावना वैदिक मूल्यपरक शिक्षा का प्राण है। प्रत्येक व्यक्ति परमात्मा का अंश है और सम्पूर्ण विश्व एक परिवार है–

''विश्वं भत्येकनीडम्।''[8]

वर्तमान वैज्ञानिक एवं भौतिकवादी युग में यद्यपि शिक्षा का प्रसार तेजी से हो रहा है, परन्तु मूल्य आधारित शिक्षा का स्थान सिर्फ रोजगारपरक शिक्षा ने ले लिया है। वैदिक वाङ्मय में मानवीय मूल्यों का वर्णन व्यापक रूप में हुआ है। भारत एक मूल्य प्रधान देश रहा है। यहाँ के सामाजिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं आर्थिक मूल्य पूरे संसार में प्रसिद्ध रहा है।

वास्तव में मानवीय मूल्यों की स्थापना ही वास्तविक शिक्षा है, जो हमारे लौकिक एवं पारलौकिक जीवन के लिए परम आवश्यक है। शिक्षा का मूल उद्देश्य उच्च मानवीय मूल्यों की प्राप्ति है, जो प्राणी मात्र के प्रति दया, करूणा एवं सद्भाव के बिना संभव नहीं है। इन उच्च मूल्यों को अपनाकर व्यक्ति अच्छे कर्मों की आदत द्वारा सुसंस्कृत हो उत्तम चरित्र का निर्माण तथा अपना सर्वांगीण विकास कर सकता है। सुशिक्षा के माध्यम से

ऐसे समाज का निर्माण किया जा सकता है, जिसमें मानवीय मूल्यों के प्रति लगाव हो तथा जिसमें परोपकार, सहयोग, सहिष्णुता, भ्रातृत्व, विनम्रता, संवेदनशीलता तथा न्यायपूर्णता आदि गुणों को अपने व्यावहारिक जीवन में उतारा जा सके।

वैदिक कालीन समाज अनुशासन, समानता, मर्यादा तथा सामाजिक आदर्श आदि मानदण्डों पर आधारित था। वैदिक मानव मानवीय मूल्यों के प्रति सदैव सजग एवं जागरूक रहा है। उनका जीवन विवेक सम्मत् बुद्धि द्वारा सुस्थापित एक अनुशासनपूर्ण, संयमित, सत्य संकल्पित था, जीवन में प्रगति का वेग था तथा कल्याणमूलक मनन का चिरस्पन्दन था। वह ईश्वर से ''असतो मा सद्गमय, तमसो मा ज्योतिर्गमय।''[9]

जैसे श्रेष्ठ मानवीय मूल्यों की प्रार्थना करता है। वैदिक वाङ्मय में ''सत्यं वद। धर्मं चर। स्वाध्यान्मा प्रमदः तथा मातृदेवो भव। पितृदेवो भव। आचार्य देवो भव। अतिथि देवा भव।''[10] आदि जैसी उदात्त भावनायें वर्णित हैं। अतिथि सत्कार का श्रेष्ठ मूल्य कठोपनिषद् में यम–नचिकेता संवाद के आख्यान में प्राप्त होता है–

आशा प्रतीक्षे संगतं सूनश्तां च इष्टापूर्ते पुत्रपशूंश्च सर्वान्।

एतद् वृङ्क्ते पुरूषस्याल्पमेधसो यस्मानश्रन् वसति ब्राह्मणो गृहे।।[11]

तिस्रो रात्रीर्थदवात्सीगर्रहे मे अनश्रन् ब्रम्हन्नतिथिर्नमस्यः।

नमस्तेअस्तु ब्रम्हान् स्वस्ति मेऽस्तु तस्मात् प्रति त्रीन् वरान् वष्णीष्क।।[12]

सम्पूर्ण मानव जाति को एक ही पिता की सन्तान मानकर एकता और अखण्डता के सूत्र में बाँधने की बात कही गयी है–

स नः पितेव सूनवेऽग्ने सूपायनो भव।

सचस्वा नः स्वस्तये।।[13]

यजुर्वेद में कहा गया है कि वह व्यवहार जो दूसरों के द्वारा अपने साथ होने पर मनुष्य को उचित न लगे, उसको वैसा व्यवहार दूसरों के साथ कभी भी नहीं करना चाहिए। मनुष्य जैसे अपने लिए सुख की इच्छा करता है, उसको वैसे ही दूसरों के लिए भी सुख की इच्छा करनी चाहिए–

इष्कर्तारहध्वरस्य प्रचेतसं क्षयन्तं राधसो महः।

रातिं वामस्य सुभगां महीमिषं दधासि सानसिं रयिम्।।[14]

हमारा सबसे बड़ा धर्म मानवता है। मानव प्रेम से संघटित होकर रहे और सबके सुख–दुःख आदि समान रूप से जाने तो विश्व का कल्याण अवश्यम्भावी है –

संगच्छध्वं सं वदध्वं सं वो मनांसि जानताम्।

देवा भागं यथा पूर्वे संजानाना उपासते।।[15]

अर्थात् हे स्तोताओं! आप परस्पर मिल–जुलकर चलें, परस्पर मिलकर स्नेहपूर्वक वार्तालाप करें। आपके मन समान विचारधारा वाले होकर ज्ञानार्जन करें, जिस प्रकार पूर्वकाल में सज्जनों ने एक साथ मिलकर यज्ञादि कार्यों को करते हुए देवों की उपासना की थी, उसी प्रकार आप सभी एकमत हो जाओ। सबके प्रति समभाव रखने से शान्ति और आनन्द की प्राप्ति होती है। इस समभाव का वरणीय स्वरूप वेद में उपलब्ध होता है–

समानी व आकूतिः समाना हृदयानि वः।

समानमस्तु वो मनो यथा वः सुसहासति।।[16]

अर्थात् हे मनुष्यों! तुम्हारे हृदय (भावनायें) एक समान हों, तुम्हारे मन (विचार) एक जैसे हों, संकल्प (कार्य) एक तरह के हों, ताकि तुम संगठित होकर अपने सभी कार्य कर सको।

गृहस्थ आश्रम पूरी सामाजिक व्यवस्था की रीढ़ है। प्रेम और सौहार्द ही आदर्श परिवार का मूल आधार है। आदर्श गृहस्थी वह है, जिसमें बेटे माता–पिता के आज्ञाकारी हों। माता–पिता बच्चों के हितकारी हों। पति और पत्नी के पारस्परिक सम्बन्ध सुमधुर और सुखदाई हों। ऐसे ही परिवार सदैव फलते–फूलते और सुखी रहते हैं :–

अनुव्रतः पितुः पुत्रो मात्रा भवतु संमनाः।

जाया पत्ये मधुमतीं वाचं वदतु शान्तिवाम्।।[17]

शास्त्रों में नैतिक मर्यादाओं का प्रतिपादन किया गया है, जिनके द्वारा मानवीय मूल्यों का निर्धारण होता है। मूल्यों से तात्पर्य ''सर्वे भवन्तु सुखिनः, सर्वे सन्तु निरामयाः'', ''सत्यं शिवं सुन्दरम्'', ''वसुधैव कुटुम्बकम्'', ''अयं निजः परोवेन्त्ति गणना लघुचेतसां'' जैसी अवधारणाओं से है। मानव में प्रेम, दया, सौहार्द की भावना होने पर ही वह समाज के विकास में सहायक हो सकता है तथा अपनी सभ्यता एवं संस्कृति को श्रेष्ठ व उन्नत बनाकर राष्ट्रीय परम्पराओं एवं संस्कृति को संरक्षित कर सकता है। यदि हम वैदिक वाङ्मय में निहित मानवीय मूल्यों को स्थापित करें तो मानवीय भावनाओं का विकास होगा तथा समाज भी सुदृढ़ हो सकेगा।

विश्व के अन्य देश मानवों की जन्मभूमि हैं, परन्तु भारत मानवता की जन्मभूमि है। महान् साहित्यकार जयशंकर प्रसाद की यह उक्ति भारतीय सभ्यता और संस्कृति की नीव को सुदृढ़ करती है। यह सुदृढ़ता वेदों के कारण ही है। वेद भारतीय आध्यात्म, धर्म, नैतिकता, सभ्यता एवं संस्कृति के भव्य एवं विशाल आधार स्तम्भ हैं। मानवता का मूल सिद्धान्त वैदिक ऋचाओं में अन्तर्निहित है।

वैदिक जीवन सादगी एवं उच्चता से ओतप्रोत था। वैदिक वाङ्मय में जहाँ एक ओर धार्मिक स्तुतियाँ हैं वहीं दूसरी ओर उन स्तुतियों में मानवीय मूल्यों के उदान्त प्रतिमान मणिवत् अनुस्यूत हैं। वैदिक वाङ्मय में विश्व की समस्त समस्याओं का समाधान समग्र रूप में विद्यमान है। वैदिक जीवन उपासनामय था। भौतिकता और आध्यात्मिकता के बीच सम्यक् सामंजस्य से समस्त दुःखों का निदान सम्भव है। योग–क्षेमात्मक अभ्युदय तथा पारलौकिक सद्गति सर्वविधि कल्याण का मार्ग धर्म, वैदिक वाङ्मय से ज्ञेय है।

वैदिक वाङ्मय में निहित मानवीय मूल्यों का सम्बन्ध किसी युग–विशेष, देश–विशेष या जाति–विशेष से न होकर मानव विकास एवं कल्याण की अन्तश्तेचतना से है। पारस्परिक एकता, सहयोग, सद्भाव एवं संगठन आदि के अनेक मूल्य वेद मंत्रों में सुरक्षित हैं। यद्यपि समय परिवर्तन के साथ–साथ मानव की मान्यताएँ सिद्धान्त, परिवर्तित होते रहे हैं, किन्तु वैदिक वाङ्मय के अधिकांश मानवीय मूल्य आज भी शाश्वत्, अपरिवर्तित एवं प्रगति में सहायक हैं, जिनके अभाव में मानव जीवन अधूरा सा प्रतीत होता है।

उदस्त भावनाओं से भावित वैदिक धर्म विषमता रहित, शोषण मुक्त, मानवीय मूल्यों से युक्त आदर्श समाज की संकल्पना को चरितार्थ कर सकता है। एतदर्थ वैदिक धर्म में वर्णित मानवीय मूल्य सनातन एवं सार्वभौम है, जिसके मौलिक सिद्धान्तों को मनसा, वाचा व कर्मणा अपनाये बिना समाज का पूर्ण कल्याण तथा राष्ट्र का सम्यक् विकास सम्भव नहीं है।

संदर्भ ग्रन्थ सूची

1. मनुस्मृति–2/3
2. शुक्ल यजुर्वेद–36/17
3. निरूक्त–यास्क
4. सामवेद–उत्तरार्चिक, अध्याय 13, खण्ड–4
5. बृहद्देवता, अध्याय–7
6. गौतम धर्मसूत्र–1/1
7. ऋग्वेद–10/191/3
8. यजुर्वेद–32/8
9. बृहदारण्यकोपनिषद्–प्रथम अध्याय
10. तैत्तिरीयोपनिषद्, शिक्षा वल्ली, अनुवाक् 11
11. कठोपनिषद्, अध्याय–1, वल्ली–1
12. कठोपनिषद्, अध्याय–1, वल्ली–1
13. ऋग्वेद–1/1/9
14. यजुर्वेद–12/191/2
15. ऋग्वेद–10/191/2
16. ऋग्वेद–10/191/4
17. अथर्ववेद–3/30/2